इकाई 1

प्रेरक प्रसंग

महान व्यक्तियों के जीवन से जुड़ी प्रेरणादायी घटनाओं को प्रेरक प्रसंगों के रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा रही है। कई बार बचपन से जुड़ी कोई छोटी सी घटना भी हमें प्रेरणा प्रदान कर जाती है; लेकिन उस तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता। जीवन के छोटे–छोटे प्रसंग भी हमें सोचने को विवश कर सकते हैं। इस इकाई में शामिल किए गए पाठ न केवल विधा के स्तर पर, बल्कि संवेदना के स्तर पर भी जीवन के कुछ अनछुए प्रसंगों की ओर ध्यान आकर्षित करेंगे।

जीवन में निराशा और हताशा के ऐसे कई क्षण आते हैं, जब हम पूरी तरह हार कर बैठ जाते हैं। नीरज की कविता **जीवन नहीं मरा करता है** निराशा के इन्हीं क्षणों से हमें मुक्त कर आशा का संचार करती है।

बच्चों का हृदय बड़ा निश्छल होता है। उनमें किसी प्रकार के भेद–भाव नहीं होते। जैसे–जैसे वे बड़े होने लगते हैं, उनके भीतर भेदमूलक व्यवहार उनके व्यक्तित्व में झलकने लगते हैं। प्रेमचंद की कहानी **गुल्ली–डंडा,** खेल की पृष्ठभूमि में मनुष्य के इसी अंतर्द्वंद्व को प्रस्तुत करती है।

बच्चे भी कई बार ऐसे जोखिम भरे काम कर बैठते हैं, जो बड़ों की कल्पना से बाहर होते हैं। तोत्तो–चान द्वारा पोलियो से ग्रस्त साथी यासुकी–चान को अपने पेड़ पर चढ़ाने का जोखिम भरा कार्य एक ऐसे **अपूर्व अनुभव** की सृष्टि करता है, जहाँ शब्द भी चूक जाते हैं। कहने–सुनने से अधिक गहरी अनुभूति के स्तर पर उतर कर इन्हें महसूस करने की जरुरत होती है।